प्रकाशनार्थ

आनन्द इंजीनियरिंग कालेज, कीथम आगरा

स्थानीय उद्योगों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था ही दूर करेगी बेरोजगारी

शारदा ग्रुप ऑफ इंस्टीटूयशन के आगरा स्थित आनन्द इंजीनियरिंग कालेज के अप्लाइड साइंस विभाग में कार्यरत डा. ज्योति कुलश्रेष्ठ **कालेज के निदेशक डा. शैलेन्द्र सिंह** के मार्गदर्शन में भारतीय समाज विज्ञान परिषद नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित परियोजना **समाजमिति एवं औद्योगिक सम्बन्ध** पर कार्य कर रहीं हैं। समाजमिति सामाजिक एवं सामाजिक सम्बन्धों का अवलोकन एवं मूल्यांकन करने की वह विधि है जिसके द्वारा किसी भी समूह में विद्यमान स्टार समूह द्वारा स्वीकृत व्यक्ति या तिरस्कृत व्यक्ति, विभिन्न कड़ियों, म्यूचल्स आदि की पहचान कर पारस्परिक सम्बन्धों का विश्लेषण किया जाता है। इस परियोजना के अंतर्गत समाजमिति के द्वारा उत्पादन प्रकिया को समझने एवं सामाजिक सम्बन्धों के विश्लेषण के आधार पर उत्पादन बढ़ाने पर शोध कार्य प्रगति पर है। शोध की इसी कड़ी में डा. ज्योति कुलश्रेष्ठ द्वारा आगरा मथुरा क्षेत्र के प्रसिद्ध उद्योगपतियों के साथ बातचीत कर समाजमिति पर उनके विचारों को जाना जा रहा है **साक्षात्कार की इस कड़ी में आज हम** श्रीमान पूरन डावर जी के साथ बातचीत के कुछ अंश प्रकाशित कर रहे है।

आगरा के उद्योग जगत में श्रीमान पूरन डावर एक जाना माना नाम है। वे न केवल डावर समूह के स्वामी है बल्कि औद्योगिक विकास के साथ–साथ समाज कल्याण एवं सामाजिक समस्याओं के निराकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुत हैं **श्रीमान पूरन डावर जी के साथ साक्षात्कार के कुछ अंश**

प्रश्नः आपके द्वारा चलाई जा रही सामाजिक परियोजनाओं के बारे में बताइये।

उत्तरः हमने अपने पुत्र की स्मृति में संभव डावर मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना की है जिसके अंतर्गत हम शिक्षा एवं खेलकूद के क्षेत्र में मेधावी एवं गरीब विद्याार्थियों को प्रायोजित करते हैं, मैं घर से ही दान या कल्याण का कार्य शुरू करने में विश्वास करता हूँ जिसके अंतर्गत अपनी फैक्टरी के न्यूनतम आय वाले कामगारों के बच्चों की शिक्षा को प्रायोजित करता हूँ। एक बच्चे पर 100 प्रतिशत व दो बच्चों पर 50 प्रतिशत फीस का प्रायोजन हमारी कम्पनी द्वारा किया जाता है इस प्रकार फीस की संरचना के आधार पर हमने श्रेणियां विभक्त की हुई हैं जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों को कर सकें। मुझे लगता है कि बच्चों के लिये शिक्षा का अधिकार उद्योगों के द्वारा ही लागू किया जाना चाहिए। मैं अपने घरेलू कामगारों के लिए चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराता हूँ, उनके लिए बीमा की व्यवस्था भी है। हैल्प आगरा के द्वारा भी हम लोग एम्बुलेंस व अन्य चिकित्सीय सुविधायें प्रदान करते हैं।

भूख मुक्त भारत ही मेरा स्वप्न है जिसके अंतर्गत हम अन्त्योदय अन्नपूर्णा परियोजना चला रहे हैं। इस परियोजना के तहत दस हजार लोगों का भोजन एक साथ बनाने की व्यवस्था है। वर्तमान में यह सेवा भगवान टाकीज, हाथरस रोड, रामबाग, बोदला, खेरिया मोड तथा मधुनगर में संचालित है। इन क्षेत्रों में भी हम दूरस्थ क्षेत्रों के जरूरतमंदों तक पहुॅचने की कोशिश करते हैं। हम सेवाभारती के साथ जुड़कर इस व्यवस्था को पूरे भारत में नियमित करना चाहते हैं। इस परियोजना के अन्तर्गत हम हर व्यक्ति को

आमंत्रित करते हैं कि वह मात्र 5100रू में अपने जन्मदिन, शादी की सालगिरह एवं अन्य अवसरों पर भोजन प्रायोजित करें। हमारा अगला कदम न्यूनतम दरों पर स्टाल्स पर चाय, काफी , चाट आदि की व्यवस्था पूरे आगरा शहर के लिए करवाना है।

प्रश्नः आपको क्या लगता है कि आपके उद्योग में श्रमिकों को किस तरह की समस्या का सामना करना पड़ता है?

उत्तरः मुझे नहीं लगता कि मेरे श्रमिकों को उद्योग से सम्बन्धित को समस्या हो सकती है हम उन्हें बेहतर सीखने की प्रक्रिया प्रदान करते हैं। मैं चाहता हूँ कि मेरे कर्मचारी अपनी योग्यता में अधिक से अधिक वृद्धि करें ताकि उन्हें लाइनमेन से फ्लोरमेन एवं उससे आगे उत्पादन तक पदोन्नत किया जा सके। लेकिन इसके लिए स्वयं का एक विकल्प स्वयं ही तैयार करना होगा तभी वे आगे बढ़ पायेंगे अतः सफलता का मूलमंत्र है कि स्वयं की पदोन्नति से पहले दूसरे की पदोन्नति की व्यवस्था करना या दूसरे शब्दों में आपके व्यवस्थापन को दिखना चाहिए कि अगर आपको पदोन्नत करके दूसरे की जगह भेजा जाता है तो आपका स्थान सम्भालने के लिए आपके ही जितना योग्य व्यक्ति उपलब्ध है।

प्रश्नः आपको क्या लगता है कि कभी– कभी श्रमिक समस्यायें स्वयं मैनेजमेंट के द्वारा ही उत्पन्न की हुई होती हैं।

उत्तरः हमेशा ही इसकी सम्भावन रहती है। स्तरीकृत व्यवस्था में लोग एक दूसरे से ऊपर जाने की कोशिश में लगे रहते हैं और कभी–कभी श्रमिक इससे प्रभावित हो जाते हैं लेकिन मेरे उद्योग में ऐसा चलन नहीं है। मुझे लगता है कि कार्य संतुष्टि (जॉब सैटिस्फैक्शन) इस तरह के कार्यकलापों को हतोत्साहित करने के लिए बहुत आवश्यक है। अब वह समय नहीं रहा कि श्रमिकों से डाँटकर कार्य कराया जा सके, अब तो आपको मानवीय उपागम का पालन करना ही पड़ेगा। श्रमिकों को पूरा सम्मान दिया जाना आवश्यक है।

प्रश्नः समाजमिति उपागम नेतृत्व का चयन करवाने में सहायक है। क्या आपको लगता है कि स्तरीकृत व्यवस्था के स्थान पर इस उपागम को वरीयता दी जा सकती है?

उत्तरः मुझे हमेशा लगता है कि व्यक्ति की रूचि को महत्व दिया जाना चाहिए। यदि अपेक्षाकृत निम्न स्तरीकरण का व्यक्ति अधिक प्रभावशाली है तो मैं निश्चित रूप से उसकी रूचि के अनुसार उसे व्यवस्थित करूंगा। वैज्ञानिक प्रबन्धन को लागू करने के कूटनीतिक तरीकों का इस्तेमाल करना आवश्यक है। यदि समाजमिति यह बताने में सक्षम है कि कौन सा व्यक्ति किस क्षेत्र में नेतृत्व क्षमता रखता है तो हमें इस अपनाने में कोई परहेज नहीं है।

प्रश्नः वर्तमान औद्योगिक व्यवस्था में आप क्या सुझाव देना चाहेंगे?

उत्तरः शिक्षा व्यवस्था सदैव स्थानीय औद्योगिक व्यवस्था के अनुसार होनी चाहिए, जैसे कि आगरा में जूता और पर्यटन उद्योग है तो यहाँ के स्कूली पाठ्यक्रम में इन विषयों को अनिवार्य विषय बनाना चाहिए। सम्बन्धित विभाग इसकी जिम्मेदारी ले और विद्यार्थियों के लिए प्रायोगिक प्रशिक्षण भी प्रदान करे। इन विषयों की पढ़ाई कराने से कौशल विकास बचपन से शुरू हो जायेगा और अपनी योग्यता के

अनुसार विद्यार्थी अपने लिए रोजगार क्षेत्रों की खोज कर सकेगा तथा उद्यमिता के लिए अपार संभावनायें विकसित होंगी।